निकरा प्रोजेक्ट की समापन एवं वार्षिक कार्यशाला का आनलाइन आयोजन

दि 28 मई 2021 को भाकृअनुप-अटारी जोन-III कानपुर में निकरा प्रोजेक्ट की वार्षिक कार्यशाला का आनलाइन आयोजन किया गया।

कार्यशाला में डा. ए.के. सिंह, उपमहानिदेशक (कृ.प्र.) ने बताया कि निकरा प्रोजेक्ट जब प्रारम्भ हुआ था तो जोन-III में उत्तराखण्ड भी शामिल था। वहां भी मृदा एवं जल से संबंधित समस्याएं थीं। निकरा प्रोजेक्ट एक काफी सफल प्रोजेक्ट रहा है। कृषि विज्ञान केन्द्र अच्छे से कार्य कर रहे हैं परन्तु इसे और भी बेहतर बनाने की आवश्यकता है। अटारी एवं क्रीडा के सहयोग से केवीके द्वारा किये जा रहे कार्यों को और बेहतर बनाया जाये। प्रत्येक निकरा केवीके में सीड बैंक और फौडर बैंक होने की टर्मिनोलोजी को बदला जाने की आवश्यकता है। प्रोजेक्ट में 1 गांव से 3-4 गांव तक पहुँच रहे हैं। भाकृअनुप-अटारी एवं क्रीडा प्रत्येक जिले के अनुरूप योजना बनायें। आर्गेनिक फार्मिंग (जैविक खेती) भी जलवायु से सीधा जुड़ा है। आई.एफ.एस. पद्धति को बढ़ावा दिया जा रहा है।

डा. विनोद कुमार सिंह निदेशक क्रीडा हैदराबाद ने कहा कि हमने प्रयोग हो रही तकनीक को और बेहतर बनाना होगा। निकरा एक बहुत ही महत्वपूर्ण परियोजना है। यह परियोजना पूरी जिला स्तर पर कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से ही क्रियान्वयित हो रही है। कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों के पास काफी अन्य कार्य भी होने के बावजूद क्रीडा को अधिक सहयोग केवीके से मिल रहा है।

सम्मानीय अतिथि डा. ऐ.के. मेहता ने कहा कि समस्त अटारी काफी अच्छे से कार्य कर रहे हैं विशेषकर अटारी लुधियाना में मैंने खुद दूर दराज के क्षेत्र में भ्रमण कर वहां हो रहे बेहतर कार्यों का निरीक्षण किया है। जलवायु परिर्तन प्रत्यक्ष है। इस बार लुधियाना में उस प्रकार की तीव्र गरमी इस बार नहीं पड़ी है जैसी पहले होती थी। कृषि विज्ञान केन्द्रों में बहुत अधिक मैनपावर नहीं है परन्तु इसको देखते हुए ही उनके कार्यों को और भी बेहतर बनाने की आवश्यकता है।

इसके पूर्व डा. अतर सिंह निदेशक भाकृअनुप-अटारी कानपुर ने विभिन्न तकनीकी किस्मों का परिणाम एवं समस्याग्रस्त 13 जिलों के बारे में संक्षिप्त वर्णन किया। 4 जिले बाढ़ग्रस्त स्थिति के 4 सूखा प्रभावित 2 जिले ऊसर तथा 2 जिले पानी की कमी वाले थे। पिछले 3 सालों की सबसे अच्छी तकनीकी सभी 13 जिलों में प्रभावी तकनीकी रही है जिनमें धान की डी.एस.आर., गेहूँ की जीरो टिलेज (DBW-17), लोबिया (काशी कंचन), लाइन बुवाई, सरसों (T-59) लाइन बुवाई, गन्ना (पत्ती पलवार), लेवलिंग और बेडिंग, साल्ट, टोलरेंट धान (CSR-36.43), गेहूँ (KRL-210), सरसों (CS-S6) दलहन तथा तिलहन की नई किस्मों का प्रदर्शन मटर (KPRM-522), मूंग (Swati), उर्द (शेखर-2 एवं आजाद-1,3), मसूर, सरसों और तिल (शेखर) तथा अन्य फसलों का प्रदर्शन करने साथ कस्टम हायरिंग सेन्टर्स से 1.28 लाख रू. की आमदनी भी की गयी।

कार्यशाला में अध्यक्ष डा. ए.के. सिंह-उपमहानिदेशक (कृ.प्र.) भाकृअनुप थे, कार्यशाला के आयोजक डा. अतर सिंह-निदेशक भाकृअनुप-अटारी कानपुर, मुख्य अतिथि डा. विनोद कुमार सिंह-निदेशक भाकृअनुप-क्रीडा हैदाराबाद, सम्मानीय अतिथि डा. ए.के. मेहता से.नि. सहायक महानिदेशक एवं चेयरमैन जेड.एम.सी. एवं अतिथि डा. जे.वी.एन.एस. प्रसाद रहे। प्रधान वैज्ञानिक डा. राघवेन्द्र सिंह ने समस्त निकरा कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यशाला में उपस्थित अध्यक्षों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

ICAR-ATARI, Kanpur organized Annual review workshop of NICRA project

The annual review workshop of NICRA Project was organized online on 28th May 2021 at ICAR-ATARI Zone-III, Kanpur.

In the workshop, Dr. A.K. Singh, DDG (AE) said that when the NICRA project was started, Uttarakhand was also included in Zone-III. There were also problems related to soil and water. The NICRA project has been a fairly successful project. The Krishi Vigyan Kendras are working well, but there is a need to make it even better. The work being implemented by KVKs should be further improved with the help of ATARIs and CRIDA. There is a need to change the terminology of each NICRA KVK to have a seed bank and a fodder bank. The project is now reaching 3-4 villages from 1 village. ICAR-ATARIs and CRIDA should plan according to each district. Organic farming is also directly related to climate. IFS method is being promoted.

Dr. Vinod Kumar Singh Director, CRIDA Hyderabad said that we have to improve the technology being used. NICRA is a very important project. This project is being implemented at the district level only through Krishi Vigyan Kendras. Despite considerable other work scientists of Krishi Vigyan Kendras are doing better work. Last 10 year work done under NICRA KVKs reviewed w.e.f. 2011-2020 & Annual action plan was discussed for 2021-22.

Guest of Honor Dr. A.K. Mehta Chairman ZMC, Zone-III Kanpur said that all the ATARIs are working very well, specially in ATARI Ludhiana, I have visited the remote area and inspected the appreciable work being done there. The effects of climate change are clearly visible. This time in Ludhiana, intense heat has not been present this time yet. There is not much manpower in the agricultural science centers, but in view of this, there is a need to make their works even better.

Earlier, Dr. Atar Singh Director, ICAR-ATARI, Kanpur gave a brief description about the result of different technology intervention on varieties and 13 districts that are problematic. 4 districts were flood-affected, 4 drought affected districts, 2 districts were drought and 2 districts were water depletion. The best technologies have been effective technology in all the 13 districts, including DSR of paddy, zero tillage of wheat, cowpea (Kashi Kanchan), line sowing, mustard (T-59), line sowing, sugarcane (leaf mulch), leveling and bunding, salt/tolerant paddy (CSR-36,43), wheat (KRL-210), mustard (CS-56) pulses and oilseeds, pea, Moong (Swati), Urd (Shekhar-2 and Azad-1,3), Masoor,

Mustard and Sesame (Shekhar) and other crops with demonstrations Custom Hiring Centers Income Rs 1.28 lakh was also made.
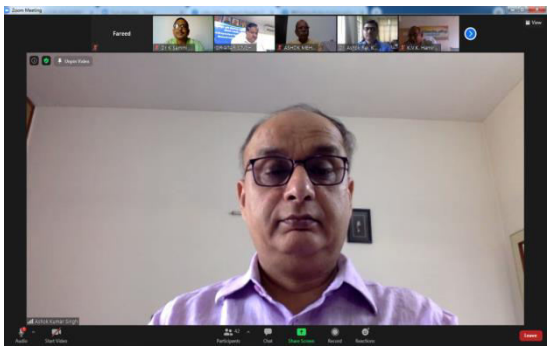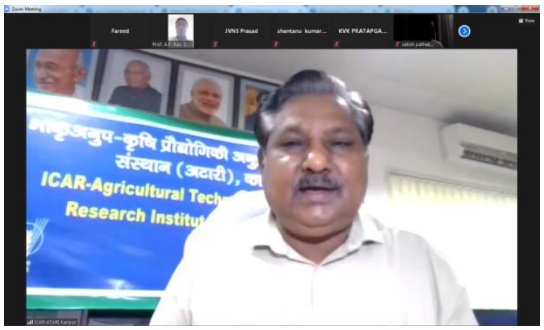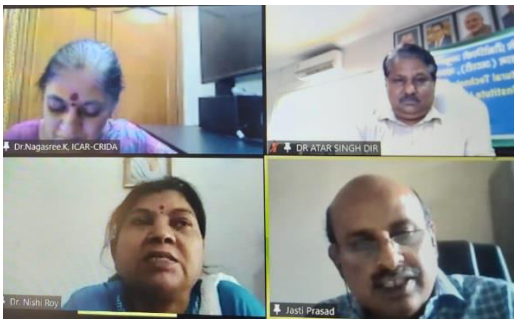
The workshop was Chaired by Dr. A.K. Singh Deputy Director General (AE), ICAR, Organizer of the workshop Dr. Atar Singh - Director ICAR-ATARI Kanpur, Dr. Vinod Kumar Singh-Director ICAR-CRIDA Hyderabad Chief Guest, Guest of Honor Dr. A.K. Mehta-Former ADG and Chairman Z.M.C., Dr. J.V.N.S. Prasad were present in the workshop. Principal scientist Dr. Raghwendra Singh extended vote of thanks to all.